University in News on 05 April 2024

AMAR UJALA MY CITY PAGE 5

शोधार्थियों को पीएचडी में पढ़ने होंगे तीन पेपर

लविवि : शिक्षाशास्त्र विभाग की फैकल्टी बोर्ड बैठक में प्रस्ताव पास

संवाद न्यूज एजेंसी

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय से पीएचडी करने वाले सभी विद्यार्थियों को शोध कार्य के दौरान तीन पेपर पढ़ने होंगे। बृहस्पतिवार को हुई शिक्षाशास्त्र विभाग के फैकल्टी बोर्ड की बैठक में प्रस्ताव पास होने के बाद इसकी औपचारिक शुरुआत हो गई। इसके साथ ही बैठक में अन्य कई प्रस्तावों को स्वीकृति प्रदान की गई।

विभागाध्यक्ष व संकाय के डीन प्रो. दिनेश कुमार ने बताया कि शैक्षणिक सत्र 2023-24 में पीएचडी में प्रवेश लेने वाले सभी विद्यार्थियों को शोध कार्य के दौरान तीन पेपर पढ़ने होंगे जो कुल 12 क्रेडिट के होंगे। अभी तक विद्यार्थियों को शोध कार्य के दौरान सिर्फ दो पेपर पढ़ने होते थे, जो आठ क्रेडिट के थे। लेकिन नई शिक्षा नीति 2020 के सफल क्रियान्वयन के बाद इसमें एक पेपर और जोड़ दिया गया। इनोवेटिव रिसर्च एप्रोच नाम के इस पेपर को पढ़ने के लिए दो क्रेडिट तय किए गए हैं। पुरानी व्यवस्था में शोधार्थी रिसर्च पब्लिकेशन एथिक्स और रिसर्च मेथडॉलॉजी की पढ़ाई करते थे। यह दोनों पेपर चार-चार क्रेडिट के होते थे। इन्हें अब पांच-पांच क्रेडिट का कर दिया गया है।

बीए का परिवर्तित पाठ्यक्रम स्वीकृत : प्रो. दिनेश कुमार ने बताया फैकल्टी बोर्ड की बैठक में बीए पाठ्यक्रम का सिलेबस जो नई शिक्षा नीति के हिसाब से तैयार किया है, उसे भी स्वीकृति दी गई। इसमें मुख्य रूप से विभाग के सभी माइनर पेपरों को 2 क्रेडिट करने की संस्तुति की गई, अभी तक यह चार क्रेडिट के होते थे। अगर एक वाक्य में कहें तो गैर जरूरी सिलेबस को कम कर दिया गया है। इसके अलावा अन्य कई बिंदुओं पर भी चर्चा कर उस पर समिति के सदस्यों से सहमति ली गई।

रैंकिंग पर राज्यपाल ने दीं शुभकामनाएं

लखनऊ। एडु रैंकिंग में स्थान पाने पर कुलाधिपति आनंदीबेन पटेल ने लखनऊ विश्वविद्यालय को शुभकामनाएं दी हैं। राज्यपाल ने कुलपति प्रो. आलोक कुमार को पत्र भेजकर खुशी व्यक्त की। लविवि ने एडु रैंकिंग में 5830 एशियाई शिक्षण संस्थानों में 454वां स्थान पाया है। (संवाद)

लविवि : मौन की अवधारणा को किया चित्रित

लखनऊ। लविवि के अंग्रेजी और आधुनिक यूरोपीय भाषा विभाग, कीस्टोन इंस्टीट्यूट इंडिया और पीवाईएसएसयूएम की ओर से मूल्य का विचार : विकलांगता और सामाजिक भूमिका मूल्यांकन पर आयोजित दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का समापन हुआ। केआईआई के निदेख बेट्सी न्यूएक्सिल ने प्रस्तुति दी। बीएचयू के प्रो. बनीव्रत महंत ने बताया कि साहित्यिक कृतियों में मौन को एक उपकरण के रूप में चित्रित किया गया है। इस मौके पर विभाग के शिक्षक प्रो. मैत्रीय प्रियदर्शनी एवं प्रो. रविंद्र प्रताप सहित विभिन्न विभागों के विद्यार्थी उपस्थित रहे। (संवाद)

NBT PAGE 4

लखनऊ विवि : पीएचडी में अब पढ़ने होंगे तीन पेपर

शिक्षा शास्त्र की फैकल्टी बोर्ड बैठक में प्रस्ताव पास मुहर

■ एनबीटी संवाददाता, लखनऊ

एलयू से पीएचडी करने वाले शोधार्थियों को शोध के दौरान अब तीन पेपर ही पढ़ने होंगे। गुरुवार को शिक्षा शास्त्र विभाग की फैकल्टी बोर्ड की बैठक में इस प्रस्ताव को लागू किया गया। एसओडी और संकाय डीन प्रो. दिनेश कुमार ने बताया कि शैक्षणिक सत्र 2023-24 में पीएचडी पाठ्यक्रम में शोध कार्य के दौरान अबतक दो ही पेपर पढ़ने होते थे, जो कुल 8 क्रेडिट के होते थे। पर नई शिक्षा नीति-2020 के तहत 'इनोवेटिव रिसर्च अप्रोच' नाम से एक और पेपर जोड़ा गया है। अब तीनों पेपर 12 क्रेडिट के होंगे। इस नए पेपर को पढ़ने के लिए दो क्रेडिट मिलेंगे।

वहीं रिसर्च पब्लिकेशन ऐथिक्स और रिसर्च मैथडॉलजी चार-चार क्रेडिट के होते थे। इन्हें अब पांच-पांच क्रेडिट का कर दिया गया है।

फैकल्टी बोर्ड की बैठक में एनईपी के तहत तैयार किए गए बीए पाठ्यक्रम को भी स्वीकृति दी गई। विभाग के सभी माइनर पेपरों को 2 क्रेडिट की संस्तुति की गई। अभी तक यह चार क्रेडिट के होते थे। बैठक में कई अन्य अहम मुद्दों पर भी चर्चा हुई।

पीएचडी चयनित 9 को करेंगे रिपोर्ट

■ एनबीटी सं., लखनऊः एलयू में केमिस्ट्री में पीएचडी के लिए चयनितों को 9 अप्रैल को विभाग में रिपोर्ट करना है। एचओडी प्रो.अनिल मिश्रा ने बताया कि केमिस्ट्री में पीएचडी में चयनितों की लिस्ट जारी हो चुकी है। जिन अभ्यर्थियों ने पीएचडी प्रोग्राम फीस जमा कर दी है, उन्हें डिपार्टमेंट में रूम नंबर-142 में रिपोर्ट करना है। अलॉटमेंट लेटर, फी रिसिप्ट, अप्लीकेशन फॉर्म, फोटो आईटडी, माइग्रेशन सर्टिफिकेट, कैरेक्टर सर्टिफिकेट, कास्ट सर्टिफिकेट, इनकम सर्टिफिकेट, नेट/जेआरएफ, ईडब्ल्यूएस सर्टिफिकेट समेत सभी मूल दस्तावेज साथ लाने हैं। नौकरी करने की स्थिति में नो ऑब्जेक्शन सर्टिफिकेट भी देना होगा।

चयनितों का हुआ डॉक्यूमेंट वेरिफिकेशन

■ एनबीटी संवाददाता, लखनऊः एकेटीयू में पीएचडी में प्रवेश परीक्षा में चयनित अभ्यर्थियों का गुरुवार को डॉक्यूमेंट वेरिफिकेशन किया गया। करीब 90% अभ्यर्थियों ने अपने प्रमाणपत्रों की जांच करवाई। काउंसलिंग शुक्रवार को होगी। वहीं होमी भाभा रिसर्च कम टीचिंग फेलोशिप के तहत 25 सीटों का आवंटन भी शुक्रवार को किया जाएगा।

'गर्भ संस्कार प्रोग्राम' से हुआ हेल्दी बेबी का जन्म

LU के मनोविज्ञान विभाग के शोध में सामने आया तथ्य

■ एनबीटी संवाददाता, लखनऊ

गर्भ संस्कार देने से गर्भवती महिला के मानसिक स्वास्थ्य में सकारात्मक परिवर्तन आता है। बच्चे के प्रति लगाव बढ़ता है। प्रसूताएं अपनी गर्भ अवस्था को प्रसन्न रहकर पूर्ण कर पाती हैं और एक स्वस्थ बच्चे को जन्म देती हैं। ये तथ्य एलयू में के गर्भ संस्कार प्रोग्राम में हुए पहले शोध में सामने आए हैं। यह रिसर्च पेपर पब्लिश हो चुका है।

एलयू की मनोविज्ञान एचओडी डॉ.अर्चना शुक्ला के पर्यवेक्षण में शोध पूरा शोधार्थी प्रज्ञा वर्मा एक लाइसेंस प्राप्त क्लिनिकल साइकॉलजिस्ट हैं। उनका शोध शीर्षक 'ए स्टडी ऑफ स्ट्रैंथनिंग मदर-फीटस बॉन्डिंग एमंग प्रेगनेंट वूमेन थ्रू प्रेनाटल एजुकेशन ऑन गर्भ संस्कार' है। शोध के दौरान गर्भ संस्कार के आधार पर गर्भवती महिलाओं की काउंसलिंग की गई। यह शोध गर्भवतियों का उनका गर्भस्थ शिशु के प्रति लगाव बढ़ाने में कारगर साबित हुआ है।

100 गर्भवतियों पर शोध

प्रथम चरण में 100 गर्भवती महिलाओं पर अध्ययन हुआ। उनका गर्भस्थ शिशु के प्रति लगाव, सोच और मानसिक स्वास्थ्य का आकलन किया गया। गभवतियां सोचती थीं कि उनके होने वाले बच्चे के स्वास्थ्य में सिर्फ दूसरों की सलाह या डॉक्टरों की दवाओं का असर पड़ता है। मसलन वे अपने बच्चे के प्रति कोई प्रयास करती थीं।

गर्भ संवाद भी सिखाया

वीसी प्रो.आलोक राय ने बताया कि दूसरे चरण में 30 गर्भवती महिलाओं को गर्भ संस्कार व गर्भ संवाद सिखाया गया। तीसरे चरण में दोबारा जांच करने पर गर्भ संस्कार व गर्भ संवाद के कारण के बाद गर्भवतियों के मानसिक स्वास्थ्य में सकारात्मक परिवर्तन मिला। उन्होंने खुशहाल गर्भावस्था के साथ एक हेल्दी बेबी को जन्म दिया।

HINDUSTAN PAGE 6

वीणा सुधारेगी गर्भवती महिलाओं का बीपी और शुगर

■ शाश्वत मिश्रा

25 गर्भवती औरतों को एक माह काउंसलिंग से सिखाया **100** गर्भवती महिलाएं शोध के पहले चरण में शामिल

■ एलयू के मनोविज्ञान विभाग के शोध में सामने आई बात

■ गर्भ संस्कार में शोध कराने वाला पहला विवि बना एलयू

लखनऊ। वीणा संगीत को एक खास आवाज पर सुनने और मेडिटेशन की मदद से गर्भ में पल रहे बच्चे से संवाद कर सकेंगे। गर्भ संस्कार के बारे में जानकारी होने से गर्भवती महिलाओं को हर छोटी-छोटी समस्या के लिए डॉक्टर के चक्कर नहीं लगाने पड़ेंगे। बीपी और शुगर सामान्य रहेंगे। नींद अच्छी आएगी। घर का वातावरण खुशनुमा होगा। गर्भ के दौरान चिंता व अवसाद जैसी स्थिति नहीं होगी। यह तथ्य लखनऊ विश्वविद्यालय के मनोविज्ञान विभाग के एक शोध में सामने आया है।

एलयू के मनोविज्ञान विभाग में विभागाध्यक्ष डॉ. अर्चना शुक्ला के पर्यवेक्षण में पीएचडी छात्रा प्रज्ञा वर्मा ने गर्भ संस्कार विषय पर शोध किया है। विभागाध्यक्ष ने बताया कि गर्भवती महिलाओं में होने वाले बच्चों के प्रति लगाव बढ़ाने और स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में यह शोध कारगर साबित हुआ है। उन्होंने बताया कि छात्रा ने तीन साल तीन महीने में पीएचडी पूरी की है।

विभागाध्यक्ष डॉ. अर्चना शुक्ला ने बताया कि शोध के प्रथम चरण में 100 गर्भवती महिलाओं को शामिल किया था। इसमें गर्भवती महिलाओं का बच्चे के प्रति लगाव, मानसिक स्वास्थ्य और होने वाले बच्चे के प्रति उनकी सोच का आकलन किया गया। आकलन में यह पाया गया कि लगभग 20 महिलाओं में अजन्मे बच्चे के लिए लगाव कम था।

वह यह सोचती थीं कि बच्चे के स्वास्थ्य में सिर्फ दूसरे की बताई गई सलाह या डॉक्टरों की दवाओं का ही असर पड़ता है। इस कारण से वह खुद अपने बच्चे के प्रति किसी भी तरह का प्रयास करना जरूरी नहीं समझती थीं।

छात्रा प्रज्ञा और कुलपति आलोक राय

राज्यपाल ने कहा था गर्भ संस्कार शुरू करने को

राज्यपाल आनंदीबेन पटेल ने गर्भ संस्कार विषय की पढ़ाई शुरू कराने की बात कही थी। जिसके बाद एलयू ने वर्ष 2020 में गर्भ संस्कार पर कोर्स शुरू किया। पाठ्यक्रम में बदलाव कर गर्भ संस्कार को जोड़ा गया। इससे प्रदेश में गर्भ संस्कार में पीएचडी कराने वाला एलयू पहला विश्वविद्यालय बन गया है।

शोध के दूसरे चरण में 25 गर्भवती महिलाएं

शोध के दूसरे चरण यानी काउंसलिंग के लिए 25 गर्भवती महिलाओं को चुना गया था। इन महिलाओं का अजन्मे बच्चों के प्रति कम लगाव था। यह महिलाएं गर्भ के दौरान ब्लड प्रेशर, डायबिटीज, चिंता और चिडचिडापन जैसी कई दिक्कतों से परेशान थी। इन महिलाओं को लगातार एक महीने तक काउंसलिंग दी गई। पुरानी आयुर्वेदिक भारतीय शैली के कुछ नियमों को भी अपनाया गया। साथ ही महिला के गर्भ की आयु के अनुसार अलग-अलग योग, संगीत, पौष्टिक आहार, मंत्रोच्चारण, ईश्वर से प्रार्थना, सकारात्मक रखना सिखाया गया। इससे गर्भ संवाद की क्षमता पैदा हुई।

i-NEXT PAGE 4

डिस्टेंस एजुकेशन सेंटर ओएनजीसी भवन

LUCKNOW : लखनऊ विश्वविद्यालय के आनलाइन एंड डिस्टेंस एजुकेशन का सेंटर परिसर में बने ओएनजीसी भवन के प्रथम तल कमरा नंबर 11 आवंटित किया गया है. कुलपति के अनुमोदन के बाद कुलसचिव डा. विनोद कुमार सिंह ने पत्र जारी किया है.

नौ अप्रैल को करनी होगी रिपोर्ट

लखनऊ विश्वविद्यालय में सत्र 2023-24 के केमिस्ट्री विषय में पीएच.डी दाखिले के अभ्यर्थियों को नौ अप्रैल को विभाग में सुबह 11 बजे कमरा नंबर एस 142 में रिपोर्ट करनी होगी. विभागाध्यक्ष प्रो. अनिल मिश्रा ने बताया कि अभ्यर्थियों को आवंटन पत्र, फीस रसीद, आवेदन फार्म, फोटो पहचान पत्र, चरित्र प्रमाण पत्र, माइग्रेशन प्रमाण पत्र, गैप शपथ पत्र (यदि आवश्यक हो), चरित्र प्रमाण पत्र (यदि लागू हो), आय प्रमाण पत्र (यदि लागू हो), नेट/जेआरएफ प्रमाण पत्र (यदि लागू हो), ईडब्ल्यूएस (यदि लागू हो) व संस्थान के हेड की ओर से एनओसी लेकर आना है.

राज्यपाल ने दी एलयू वीसी को बधाई

राज्यपाल एवं कुलाधिपति आनंदी बेन पटेल ने एडु रैंकिंग में लवि को उत्तर प्रदेश को चौथा, एशियाई संस्थानों में 454वां, राष्ट्रीय संस्थानों में 29वां स्थान पाने के लिए कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय को बधाई एवं शुभकामनाएं दी हैं. विश्वविद्यालय के कम्युटेशन रसायन विज्ञान विषय को देश में 13वीं, एशिया में 124वीं, प्राणी शास्त्र विषय को देश में 16वीं, एशिया में 244वीं, परणामु एवं आणविक भौतिक विज्ञान विषय को देश में 25वीं व एशिया में 225वीं, विष विज्ञान विषय को देश में 27वी और एशिया में 153वी रैंक मिली है.

JAGRAN CITY PAGE III

संस्कार से और सुधरा गर्भवती महिलाओं का स्वास्थ्य

जागरण संवाददाता, लखनऊ : गर्भ संस्कार के आधार पर महिलाओं का होने वाले बच्चों के प्रति लगाव बढ़ने के साथ-साथ उनका शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य भी बेहतर हुआ है। लखनऊ विश्वविद्यालय के मनोविज्ञान विभाग की पीएचडी छात्रा प्रज्ञा वर्मा (क्लीनिकल साइकोलाजिस्ट) की ओर से विभागाध्यक्ष डा. अर्चना शुक्ला के पर्यवेक्षण में किए गए शोध में यह बात सामने आई है। तीन साल तीन महीने में यह शोध 100 गर्भवती महिलाओं पर किया गया है। गर्भ संस्कार पाठ्यक्रम में यह पहला शोध है।

'गर्भ संस्कार पर प्रसव पूर्व शिक्षा के माध्यम से गर्भवती महिलाओं के बीच मातृ-भ्रूण बंधन को मजबूत करने का एक अध्ययन' विषय पर किया गया यह शोध तीन चरणों में हुआ। इस शोध में गर्भ संस्कार के आधार पर 100 गर्भवती महिलाओं की काउंसलिंग की गई। प्रथम चरण में 100 गर्भवती महिलाओं का उनके बच्चे के प्रति लगाव, उनके मानसिक स्वास्थ्य और उनके होने वाले बच्चे के प्रति उनकी क्या सोच थी उसका आकलन किया गया। पाया कि कुछ महिलाओं में अजन्मे बच्चे के लिए लगाव कम था, क्योंकि वे ये सोचती थी कि उनके होने वाले बच्चे के स्वास्थ्य में सिर्फ दूसरे की बताई गई सलाह या उनके डाक्टरों की बताई दवाओं का ही असर पड़ता है। दूसरे चरण में उन महिलाओं को शामिल किया गया जिन गर्भवती महिलाओं में उनके अजन्मे बच्चे के प्रति लगाव कम पाया गया।

छात्रा प्रज्ञा वर्मा को शोधपत्र के लिए बधाई देते कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय, साथ में विभागाध्यक्ष डा. अर्चना शुक्ला • सौजन्य : लवि

तीसरे चरण में मिला सुधार : गर्भ संस्कार देने से गर्भवती महिला के मानसिक स्वास्थ्य में सकारात्मक परिवर्तन आया। ये सभी क्रियाओं को निरंतर करने से महिलाओं के सकल स्वास्थ्य में लाभ मिला और गर्भवती महिलाओं का उनके बचे के प्रति लगाव बढ़ा, जिससे अपना और अपने बच्चे का विकास बेहतर ढंग से किया। अपनी गर्भावस्था को प्रसन्न रहकर पूर्ण कर पाई और एक स्वस्थ बच्चे को जन्म देने में सफल हो सकी।

लवि के मनोविज्ञान विभाग की पीएच.डी शोधार्थी ने किया शोध

100 गर्भवती महिलाओं में से 30 महिलाएं हुई थीं चिह्नित

शोध के दौरान 100 गर्भवती महिलाओं मे से 30 ऐसी मिलीं जिनका स्वास्थ्य ठीक न होने के अलावा बीपी, शुगर, अनिद्रा, चिड़चिड़ाहट, तनाव आदि की समस्या थी। उन्होंने गर्भ संस्कार के तहत 21 दिन काउंसिलिंग की गई। उन्हें गर्भस्थ अवस्था के दौरान अपनी जीवन शैली मे कुछ बदलाव करने को सिखाया गया। महिला की गर्भ की आयु के अनुसार से अलग-अलग योग, अलग-अलग संगीत, महिला में अलग-प्रकार का पौष्टिक आहार, मंत्र उच्चारण या ईश्वर से प्रार्थना या पूजा करना, प्रतिदिन अपने आप को सकारात्मक रखना अथवा गर्भ संवाद करना भी सिखाया गया।

ओएनजीसी भवन में बना आनलाइन कोर्स का सेंटर

लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय के आनलाइन एंड डिस्टेंस एजुकेशन का सेंटर परिसर में बने ओएनजीसी भवन के प्रथम तल कमरा नंबर 11 आवंटित किया गया है। कुलपति के अनुमोदन के बाद कुलसचिव डा. विनोद कुमार सिंह ने पत्र जारी किया है। (जासं)

नौ को करनी होगी रिपोर्ट

लखनऊ : लवि में सत्र 2023-24 के केमिस्ट्री विषय में पीएच .डी दाखिले के अभ्यर्थियों को नौ अप्रैल को विभाग में सुबह 11 बजे कमरा नंबर एस 142 में रिपोर्ट करनी होगी। विभागाध्यक्ष प्रो . अनिल मिश्रा ने बताया कि अभ्यर्थियों को आवंटन पत्र, फीस रसीद, आवेदन फार्म, फोटो पहचान पत्र, चरित्र प्रमाण पत्र, माइग्रेशन प्रमाण पत्र, गैप शपथ पत्र, चरित्र प्रमाण पत्र, आय प्रमाण पत्र, नेट/जेआरएफ प्रमाण पत्र, ईडब्ल्यूएस व संस्थान के हेड की ओर से एनओसी लेकर आना है। सभी अभिलेखों की मूल एवं स्व हस्ताक्षरित प्रति लाना जरूरी है। (जासं)

राज्यपाल ने दी लवि कुलपति को बधाई

जासं, लखनऊ : राज्यपाल एवं कुलाधिपति आनंदी बेन पटेल ने एडु रैंकिंग में लवि को उत्तर प्रदेश को चौथा, एशियाई संस्थानों में 454वां, राष्ट्रीय संस्थानों में 29वां स्थान पाने के लिए कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय को बधाई एवं शुभकामनाएं दी हैं। विश्वविद्यालय के कम्युटेशन रसायन विज्ञान विषय को देश में 13वीं, एशिया में 124वीं, प्राणी शास्त्र विषय को देश में 16वीं, एशिया में 244वीं, परणामु एवं आणविक भौतिक विज्ञान विषय को देश में 25वीं व एशिया में 225वीं रैंक मिली है।

पीएचडी: केमिस्ट्री छात्र नौ तक करेंरिपोर्ट

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय में रसायन विज्ञान विषय में पीएचडी चयनितों को नौ अप्रैल को रसायन शास्त्र विभाग में रिपोर्ट करना है। चयनितों को सभी आवश्यक दस्तावेज साथ में ले जाने हैं। विभागाध्यक्ष प्रो . अनिल मिश्रा ने बताया कि रसायन विज्ञान में पीएचडी में चयनितों की लिस्ट जारी हो चुकी है। जिन अभ्यर्थियों ने पीएचडी प्रोग्राम की फीस जमा कर दी है। उन्हें विभाग में कक्ष संख्या 142 में रिपोर्ट करना है। मूल दस्तावेजों के साथ रिपोर्ट करना है।

साहित्यिक कृतियों में मौन को उपकरण माना गया

लखनऊ। एलयू के अंग्रेजी और आधुनिक यूरोपीय भाषा विभाग, कीस्टोन इंस्टीट्यूट इंडिया और पीवाईएसएसयूएम की ओर से मूल्य का विचार : विकलांगता और सामाजिक भूमिका मूल्यांकन पर सम्मेलन का समापन हुआ। केआईआई के निदेख बेट्सी न्यूएक्सिल ने प्रस्तुति दी। बीएचयू के प्रो . बनीव्रत ने बताया कि साहित्यिक कृतियों में मौन को उपकरण के रूप में चित्रित किया है।

ऑनलाइन कोर्स की फीस जमा का आखिरी मौका

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय के ऑनलाइन बीकॉम और एमकॉम पाठ्यक्रम में पंजीकरण कर चुके अभ्यर्थियों के लिए फीस जमा करने का आखिरी मौका शुक्रवार को है। एलयू प्रशासन की ओर से नोटिफिकेशन जारी किया गया है। बीकॉम की प्रति सेमेस्टर 5000 और एमकॉम की प्रति सेमेस्टर 8000 हजार फीस है। प्रवक्ता प्रो. दुर्गेश श्रीवास्तव ने इस बारे में जानकारी दी।

AMRIT VICHAR PAGE 4

सामाजिक भूमिका के सहारे खोजे मूल्यांकन

कार्यालय संवाददाता, लखनऊ

▸▸ अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में विषयवार की गई चर्चाएं

अमृत विचार : लखनऊ विश्वविद्यालय में आयोजित दिव्यांगता और सामाजिक भूमिका मूल्यांकन को लेकर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के दूसरे दिन सामाजिक भूमिका मूल्यांकन की एक झलक और एक पूर्ण जीवन में इसका योगदान विषय पर चर्चा की गई।

आयोजित कार्यक्रम में दिव्यांगता से जुड़े अमानवीय प्रभाव पर जोर दिया गया। प्रो. रानु उनियाल ने डिस्कएक्सलिटी को बढ़ावा देने और समावेशिता के बीजारोपण की अनिवार्यता पर जोर दिया। कार्यक्रम के दौरान लघु फिल्म की स्क्रीनिंग हुई। छात्रों, एसएससीएआर, वांछित शिक्षाविदों द्वारा प्रस्तुत किए गए रिसर्च पेपरों के साथ चर्चा की गई। आईईएस अदिति यादव ने छात्रों को प्रोत्साहित किया। इस अवसर पर शोधार्थियों ने भी व्याख्यान प्रस्तुत किये गए।

पीएचडी में फीस को लेकर लविवि ने जारी किए निर्देश

अमृत विचार, लखनऊ : पीएचडी को लेकर लखनऊ विश्वविद्यालय प्रशासन की ओर से निर्देश जारी किये गए हैं। विभागाध्यक्ष प्रोफेसर अनिल मिश्रा ने बताया है कि जिन छात्रों ने पीएचडी एडमीशन को लेकर फीस नहीं जमा कर सके हैं। वे छात्र 9 अप्रैल तक अपनी संपूर्ण प्रक्रियाएं पूर्ण कर लें। अध्ययन आरंभ होने से पहले सभी प्रपत्रों को विभाग में प्रस्तुत किया जाना आवश्यक है।

अब ऑफलाइन के साथ ऑनलाइन शिक्षा

अमृत विचार, लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय ऑनलाइन शिक्षा देने के लिए तैयार है। इसको लेकर कुलपति ने कक्षों का आवंटन भी कर दिया है। माना जा रहा है कि ऑनलाइन सत्र से जुड़ा अध्ययन ऑफलाइन व्यवस्था के साथ ही आरंभ होगा। रजिस्ट्रार डॉ . विनोद कुमार सिंह बताते हैं कि ऑनलाइन शिक्षा को लेकर सभी व्यवस्थाएं पूरी कर ली गई है। कक्ष आवंटन भी कुलपति के निर्देश पर किया जा चुका है। अध्ययन को लेकर ओएनजीसी बिल्डिंग में कार्यालय भी स्थापित कर लिया गया है। कक्ष संख्या 11 के सहारे अध्ययन कार्यों को निष्पादन किया जाएगा। ऑनलाइन शिक्षा से जुड़ी हर व्यवस्थाएं बिल्डिंग में समायोजित कर दी गई है। अध्ययन कार्य ऑफलाइन के साथ आरंभ किया जाएगा। ताकि निश्चित समय के भीतर ऑनलाइन और ऑफलाइन पढ़ाई को एक साथ पूरा किया जा सके।

प्रदेश में लखनऊ विवि को मिला चौथा स्थान

अमृत विचार, लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय को एडु रैंकिंग में बढ़त मिली है। विश्वविद्यालय को प्रदेश में चौथा स्थान प्राप्त हुआ है। विवि ने एशियाई संस्थानों की रैंकिंग में भी बढ़त बनाई है।

लखनऊ विश्वविद्यालय का ग्राफ तेजी से एडु रैंकिंग में बढ़ा है। 5,830 एशियाई संस्थानों की सूची में इसको 454वां स्थान प्राप्त हुआ है। देश के राष्ट्रीय 876 संस्थानों में लविवि ने 29 वां स्थान प्राप्त किया है। वहीं उत्तर प्रदेश के शैक्षणिक संस्थानों में विवि ने चौथा स्थान प्राप्त किया है। लखनऊ विवि के कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय बताते हैं कि विश्वविद्यालय के उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले कम्प्युटेशनल रसायन विज्ञान विषय में देश में 13वीं एवं एशिया में 124वीं रैंक मिली है। प्राणी शास्त्र विषय में देश में 16 वीं एवं एशिया में 244 वीं रैंक प्राप्त हुई है। परमाणु एवं आणविक भौतिकी विषय में देश में 25 वीं एवं एशिया में 225 वीं रैंक तथा विष विज्ञान विषय में देश में 27 वीं एवं एशिया में 153वीं रैंक प्राप्त हुई है। उत्कृष्ट प्रदर्शन को लेकर राज्यपाल आनंदीबेन पटेल ने कुलपति को बधाई दी है।

उत्कृष्ट प्रदर्शन को लेकर राज्यपाल ने कुलपति को दी बधाई

PIONEER PAGE 4

एलयू में गर्भसंस्कार पर पहला शोध पूरा

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

लखनऊ विश्वविद्यालय के मनोविज्ञान विभाग की शोध छात्रा प्रज्ञा वर्मा ने विभागाध्यक्ष डॉ. अर्चना शुक्ला के निर्देशन में ए स्टडी ऑफ़ स्ट्रैंथनिंग मदर-फीटस बॉन्डिंग एमंग प्रेगनेंट वूमेन थ्रू प्रेनाटल एजुकेशन ऑन गर्भ संस्कार शोध कार्य किया है। विवि में शुरू हुए इस कोर्स के अंतर्गत यह पहला शोध है।

इस शोध में गर्भसंस्कार के आधार पर गर्भवती महिलाओ की काउंसलिंग की गई। यह शोध गर्भवती महिलाओ में होने वाले बच्चों के प्रति लगाव को बढ़ाने और गर्भवती महिलाओ के पूर्ण स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में कारगर साबित हुआ है। शोध के प्रथम चरण में गर्भावस्था के चौथे महीने में गर्भ धारण करने वाली 100 गर्भवती महिलाओं को अध्ययन में शामिल किया गया। महिलाओ का उनके बच्चे के प्रति लगाव, उनके मानसिक स्वास्थ्य और उनके होने वाले बच्चे के प्रति उनकी क्या सोच थी, उसका

आकलन किया गया। जिसमें यह पाया कि कुछ महिलाओं में अजन्मे बच्चे के लिए लगाव कम था, क्योंकि वो ये सोचती थी कि उनके होने वाले बच्चे के स्वास्थ्य में सिर्फ दूसरे की बताई गई सलाह या उनके डॉक्टरों की बताई गई दवाओ का ही असर पड़ता है। इस कारण वे स्वयं अपने बच्चे के प्रति कोई भी प्रयास करना जरूरी नहीं समझती थी।

इस शोध के दूसरे चरण में 30 गर्भवती महिलाओ का चयन किया गया और उन्हें इंटरवेंशन दिया गया क्योंकि उनका अपने भ्रूण से लगाव कम था। इसके कारण उन महिलाओ को गर्भ संस्कार सिखाया गया। जिसमें महिला को गर्भस्थ अवस्था के दौरान अपनी जीवन शैली में कुछ बदलाव करने को बताया गया। इसमे महिला की गर्भ की आयु के अनुसार से अलग-अलग योग, अलग-अलग संगीत, महिला में अलग-प्रकार का पौष्टिक आहार, मंत्र उच्चारण वा ईश्वर से प्रार्थना वा पूजा करना, प्रतिदिन अपने आप को साकारात्मक रखना सिखाया गया, अथवा गर्भ संवाद करना भी सिखाया गया।

इसके पश्चात तीसरे चरण में इन 30 महिलाओं की जांच की गई, और यह पता लगा कि गर्भ संस्कार देने से गर्भवती महिला के मानसिक स्वास्थ्य में सकारात्मक परिवर्तन आया। ये सभी क्रियाओं को निरंतर करने से महिलाओ के सकल स्वास्थ्य में लाभ मिला और गर्भवती महिलाओं का उनके बचे के प्रति लगाव बढ़ा। जिस से अपना और अपने बच्चे का विकास बेहतर ढंग से किया। अपनी गर्भ अवस्था को प्रसन्न रहकर पूर्ण कर पाई और एक स्वस्थ बच्चे को जन्म देने में सफल हो सकी। ये शोध 3 साल 3 महीने में पूरा हो गया। लखनऊ विश्वविद्यालय में गर्भ संस्कार पर यह पहला शोध प्रबंध है।